بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 09.11.18 मस्जिद बैतुल फ़तूह, मार्डन, लंदन।

एक सौ तीस साल गुज़रने के बाद भी अल्लाह तआला इस जामअत में ऐसे क़ुर्बानी करने वाले निष्ठावान प्रदान कर रहा है जो दीन के लिए अपनी क्षमता के अनुसार तथा कई बार अपनी शक्ति एंव सामर्थ्य से बढ़कर क़ुर्बानियाँ कर रहे हैं और उन मापदंडों पर पूरा उतर रहे हैं तथा उन वादों के भी भागीदार बन रहे हैं जो अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में फ़रमाए हैं।

तहरीक-ए-जदीद के नव वर्ष का बरकत पूर्ण ऐलान तथा दुनिया भर की जमाअतों से माल की क़ुर्बानी के ईमान वर्धक एवं मनमोहक वृत्तांतों का रूचिकर वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयत तिलावत फ़रमाई-

مَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۔ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ [۲:۲۶۲، ۲۶۳] وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ [۲:۲۶۶] الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ [۲:۲۶۹] لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ [۲:۲۷۳] الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ [۲:۲۷۵]

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह आयतें जो मैंने तिलावत की हैं सूरः बक़रः की आयतें हैं जिनमें माल को बलिदान करने का वर्णन है तथा क़ुर्बानियों के संदर्भ में लगभग एक क्रम में ही अल्लाह तआला ने इन्हें यहाँ बयान फ़रमाया है। इनका अनुवाद यह है कि उन लोगों का उदाहरण जो अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं ऐसे बीज के समान है जो सात बालें उगाता हो, प्रत्येक बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसे चाहे इससे भी बढ़कर देता है तथा अल्लाह समृद्धि प्रदान करने वाला एवं सार्वकालिक ज्ञान रखने वाला है।

फिर अगली आयत में फ़रमाया कि वे लोग जो अपना धन अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर जो वे ख़र्च करते हैं उसका उपकार जताते हुए अथवा कष्ट देते हुए पीछा नहीं करते उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास है और उन पर कोई भय नहीं होगा तथा न ही वे दुःखी होंगे।

फिर फ़रमाता है उन लोगों का उदाहरण जो अपने धन अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए अपनी आत्मा के गुणों में से कुछ गुणों का स्थाइत्व करने के लिए ख़र्च करते हैं, ऐसे बाग़ का सा है जो ऊँचे स्थान पर हो तथा उसे तेज़ वर्षा मिले तो वह बढ़ चढ़ कर अपने फल लाए और यदि उसे तेज़ वर्षा न भी पहुंचे तो ओस ही पर्याप्त हो और अल्लाह उस पर जो तुम करते हो गहरी दृष्टि रखने वाला है।

फिर अगली आयत में फ़रमाता है कि शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है तथा तुम्हें अशलीलता की प्रेरणा देता है जबकि अल्लाह तुम्हें अपनी कृपा से क्षमा और फ़ज़्ल का वादा करता है और अल्लाह समृद्धि प्रदान करने वाला तथा स्थाई ज्ञान रखने वाला है।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है- इनको हिदायत देना तुम्हारे लिए अनिवार्य नहीं किन्तु अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो भी माल तुम ख़र्च करो तो वह तुम्हारे अपने ही हित में है जबकि तुम तो अल्लाह की प्रसन्नता के अतिरिक्त कभी ख़र्च नहीं करते और जो भी तुम माल में ख़र्च करो, वह तुम्हें भरपूर वापस करके दिया जाएगा तथा कदाचित तुम्हारे साथ कोई अति नहीं की जाएगी।

फिर फ़रमाया कि वे लोग जो अपना धन ख़र्च करते हैं रात को भी और दिन को भी, छिप कर भी तथा सार्वजनिक रूप में भी तो उनके लिए उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास है और उन पर कोई भय नहीं होगा तथा न ही वे दुःख में होंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम धन के बलिदान का वर्णन करते हुए एक अवसर पर फ़रमाते हैं- मैं जो बार बार अनुरोध करता हूँ कि ख़ुदा तआला की राह में ख़र्च करो, यह ख़ुदा तआला के आदेशानुसार है। इस्लाम अन्य धर्मों का शिकार बन रहा है वे चाहते हैं कि इस्लाम का नाम व निशान मिटा दें। जब यह स्थिति हो गई है तो क्या इस्लाम की उन्नति के लिए हम क़दम न उठाएँ। ख़ुदा तआला ने इसी उद्देश्य के लिए तो इस सिलसिले का गठन किया है। अतः इसकी प्रगति के लिए प्रयास करना यह अल्लाह तआला के ओदशों का पालन है। ये वादे भी ख़ुदा तआला की ओर हैं कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के लिए देगा, मैं उसे कुछ बरकतें प्रदान करुंगा, दुनिया ही में उसे बहुत कुछ मिलेगा और मरने के बाद आख़िरत का बदला भी देख लेगा कि कितना आराम मिलता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमारी जमाअत का एक बड़ा भाग निर्धन लोगों का है परन्तु अल्लाह तआला का आभार है कि इसके बावजूद कि निर्धनों की जमाअत है तो भी मैं देखता हूँ कि उनमें श्रद्धा है और सहानुभूति है और वे इस्लाम की आवश्यकताओं का समझ कर यथासम्भव उसके लिए ख़र्च करने से नहीं रुकते।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक सौ तीस साल गुज़रने के बाद भी अल्लाह तआला इस जामअत में ऐसे क़ुर्बानी करने वाले निष्ठावान प्रदान कर रहा है जो दीन के लिए अपनी क्षमता के अनुसार तथा कई बार अपनी शक्ति एंव सामर्थ्य से बढ़कर क़ुर्बानियाँ कर रहे हैं और उन मापदंडों पर पूरा उतर रहे हैं तथा उन वादों के भी भागीदार बन रहे हैं जो अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में फ़रमाए हैं। ये स्तर अल्लाह तआला की कृपा से आज केवल और केवल अल्लाह तआला की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सला के माध्यम से स्थापित इस जामअत में ही नज़र आते हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया इसके कुछ उदाहरण पेश करता हूँ ये वृत्तांत विश्व के विभिन्न देशों में फैले हुए लोगों के हैं जो इस संकल्प को निभा रहे हैं कि हम दीन को दुनिया पर प्राथ्मिकता देते हुए अपने माल पेश करने हेतु हर समय तय्यार हैं।

इन्डिया से इंस्पैक्टर तहरीक-ए-जदीद लिखते हैं, शहाब साहब कि अहमदिया जमाअत चिन्ताकुन्टा की एक लड़की सोफ़िया बेगम ने अपने भाई के द्वारा सन्देश भेजा कि जब मैं छोटी थी तो वालिदा के साथ जलसों में जाया करती थी तथा विद्ववाों के भाषणों में सुना करती थी कि जब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु ने तहरीक-ए-जदीद की

आधार शिला रखी तथा उसके लिए धन के बलिदान की तहरीक फ़रमाई तो बहुत सी महिलाओं ने हुज़ूर की सेवा में अपने आभूषण पेश किए। जब भी यह ईमान वर्धक घटना सुनती तो मेरे दिल में एक इच्छा जन्म लेती कि काश मेरे पास भी ज़ेवर होता तो मैं भी उसे तहरीक-ए-जदीद में देती परन्तु निर्धनता के कारण मेरे लिए यह असम्भव था किन्तु अब मुझे दो तोला सोना मेरी वालिदा के निधन के बाद तर्के में मिला है, वह मैं पेश करती हूँ। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मैंने अभी पिछले जुम्अः में अमरीका में भी कहा था, प्रायः कहता रहता हूँ कि ग़रीब लोग तो माल की क़ुर्बानियाँ कर रहे हैं किन्तु धनवान जो अच्छी अवस्था में हैं उनको अपने हालात पर नज़र डालनी चाहिए कि क्या उनकी क़ुर्बानी के स्तर ऐसे हैं कि जिनके विषय में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐसे स्तर होने चाहिएँ और फिर उनको स्वीकार भी करता है।

इन्डिया से ही एक इंस्पैक्टर तहरीक-ए-जदीद कर्नाटक लिखते हैं कि एक दोस्त का चन्दा तहरीक-ए-जदीद ढाई हज़ार रुपए देय था। उनसे अदायगी का निवेदन किया गया कि तहरीक-ए-जदीद का साल पूरा होने में केवल कुछ दिन शेष हैं। इस पर उन सज्जन ने कहा कि वर्षा के कारण पिछले तीन महीने से काम पूर्णत्या बन्द है तथा आय की भी कोई आशा दिखाई नहीं पड़ती तो इस पर कहते हैं कि मैंने उन्हें कहा कि अदायगी का निश्चय कर लें तथा ख़ुदा तआला से दुआ मांगें। यह कह कर मैं अगले स्थान पर चला गया, शाम को जब वहाँ दूसरे स्थानों से वापस आया तो वे सज्जन पुरुष स्वयं मिशन हाउस आए और अपना पूरा चन्दा अदा कर दिया। मैंने उनसे पूछा यह किस प्रकार हो गया इतनी जल्दी? कहने लगे- बस यह निश्चय करने की बरकत तथा चन्दा देने की बरकत है, एक आदमी ने कुछ अवधि से मेरे पैसे देने थे और मैं कई महीने से उसके चक्कर लगा रहा था, वह नहीं दे रहा था परन्तु आज सहसा स्वयं मेरे घर आया और मेरी रक़म लौटा दी।

बर्कीना फ़ासो से मुबारक मुनीर साहब मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि पेको जामअत के एक निष्ठावान अहमदी अलहाज इब्राहीम के दो बच्चे कुछ समय से बीमार थे, काफ़ी इलाज कराया लेकिन ठीक नहीं हो रहे थे। एक हमारे मुअल्लिम साहब ने उन्हें धन की क़ुर्बानी करने की प्रेरणा दी तो उन्होंने अपने सामर्थ्यानुसार चन्दा दिया तथा दुआ की, कि ऐ अल्लाह मेरी क़ुर्बानियों को क़बूल फ़रमा तथा मेरी संतान को शीघ्र स्वस्थ कर दे। कहते हैं कि कुछ दिनों के बाद ही अल्लाह तआला की कृपा से उनके बच्चों की हालत पहल से अच्छी होने लगी। एक बच्चा तो पूर्णतः ठीक हो गया तथा दूसरे बच्चे में काफ़ी हद तक बेहतरी है और उनको यह विश्वास है कि अल्लाह तआला ने उस क़ुर्बानी को क़बूल करते हुए यह बरकत अता फ़रमाई।

जर्मनी की तहरीक-ए-जदीद के सैक्रेट्री लिखते हैं कि बोकन जामअत के एक दोस्त ने तहरीक-ए-जदीद के चन्दे में नौ सौ यूरो की वृद्धि की, यह दोस्त बताते हैं कि जिस दिन मैंने वादा किया उससे अगले दिन जब मैं फ़र्म में गया तो मालिक ने कहा मैंने तुम्हारे वेतन में सौ यूरो की वृद्धि कर दी है और फ़रवरी से अक्तूबर तक हिसाब लगाया तो कुल नौ सौ यूरो बनते हैं। यह दोस्त कहते हैं मुझे यह तो विश्वास था कि अल्लाह तआला इसकी व्यवस्था कर देगा किन्तु यह नहीं पता था कि अल्लाह तआला चौबीस घन्टे भी बतीने नहीं देगा तथा प्रबन्ध कर देगा।

आयवरी कोस्ट के मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि वहाँ तहरीक-ए-जदीद के चन्दे के बारे में एक नौ-मुबाय जमाअत में गए तथा तहरीक-ए-जदीद के विषय पर तक़रीर की गई तथा यह भी बताया कि ख़लीफ़तुल मसीह ने कहा है कि सभी लोग इस बरकत में भागीदार बनें। अगले दिन फ़ज्र की नमाज़ की पश्चात जमाअत के लोगों ने अपनी अपनी क्षमता अनुसार चन्दा देना आरम्भ किया तथा मस्जिद के इमाम साहब ने भी इस शुभ कार्य में भाग लिया तथा अपने परिवार की ओर से भी तहरीक-ए-जदीद का चन्दा अदा किया। फिर बाद में उनका छः वर्षीय बेटा अपने वालिद से सौ फ्रांक सीफ़ा लेकर आया और कहने लगा कि यह मेरा चन्दा है। कहते हैं, हमें इस छोटे से बच्चे की अदा पर बड़ा प्यार आया कि छोटी सी आयु में कैसा माल की क़ुर्बानी का चाव है। अल्लाह तआला इन नौ-मुबाईअीन की क़ुर्बानियों को स्वीकृति प्रदान करे तथा दीन और दुनिया की भलाईयाँ प्रदान करे।

इन्डोनेशिया से एक महिला लिखती हैं, वार्दि साहिबा कि पिछले रमज़ान में हमारा परिवार एक कठिनाई में लिप्त था। मेरे ससुर बीमार हो गए उन्हें हस्पताल में दाख़िल कराया गया, एक महीने तक इलाज कराते रहे किन्तु इसी बीच उनकी

दशा बड़ी दयनीय हो गई कि आई सी यू में दाख़िल होना पड़ा, बचने की आशा बड़ी कम थी। फिर उनको मेरा ख़ुत्बः याद आया जो तहरीक-ए-जदीद की बरकतों के विषय में था। अतः सब घर वालों ने एकत्र होकर निर्णय लिया कि हम सब ने इसी महीने रमज़ान में तहरीक-ए-जदीद की शत प्रतिशत अदायगी करनी है तथा शत प्रतिशत अदायगी कर दी और मुझे भी उन्होंने लिखा दुआ के लिए। कहते हैं, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुआओं के परिणाम स्वरूप तथा क़ुर्बानी के कारण मेरे ससुर की हालत अच्छी होने लगी। कुछ दिन बाद डाक्टर ने उनको घर वापस जाने की अनुमति दे दी। घर पहुंचने पर जब पड़ौसियों को पता चला कि यह तो पूर्णत्या ठीक हो गए हैं तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कैसे सम्भव है कि इतनी भयानक बीमारी के कारण मौत के द्वार पर पहुंचने वाला एक इंसान ठीक होकर वापस आ गया।

कोंगो ब्राज़ील के मुअल्लिम साहब लिखते हैं कि एक दोस्त मआवेली का बच्चा कई दिनों से बीमार चला आ रहा था। जब उनके पास चन्दे की प्रेरणा देने के लिए गए तो उन्होंने अदायगी कर दी तथा साथी ही दुआ भी करते रहे कि ऐ ख़ुदा, इस चन्दे की बरकत से मेरे बच्चे को स्वस्थ कर दे। यह दोस्त बयान करते हैं कि कुछ दिन पश्चात ही मेरे बच्चे का स्वास्थ्य ठीक हो गया तथा मैं स्वयं चकित रह गया कि किस प्रकार हमारा ख़ुदा दुआ क़बूल करता है तथा हमारी तुच्छ क़ुर्बानियों को भी क़बूल फ़रमा लेता है।

कैनेडा की सैक्रेट्री तहरीक-ए-जदीद लजना लिखती हैं कि एक बहिन ने बताया कि उनके पति ने तहरीक-ए-जदीद में एक हज़ार डालर का वादा किया था किन्तु लम्बी अवधि से बेरोज़गार था इस लिए अदायगी नहीं हो सकी। साल पूरा होने में एक सप्ताह रह गया तो सैक्रेट्री साहब माल उनके घर चन्दा लेने आए। उनके पति भीतर गए तथा बेगम से कहा कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है अब क्या करें? इस पर इस महिला ने कहा कि उनको ख़ाली हाथ तो जाने नहीं दे सकते। उसके पास कुछ बचत का पैसा था, एक हज़ार डालर, उससे चन्दा अदा कर दिया। और कहती हैं चन्दे की बरकत से उसी सप्ताह के अन्दर उनके पति को सात हज़ार मासिक का काम मिल गया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला की कृपाओं की ये घटनाएँ बयान करने के बाद अब मैं तहरीक-ए-जदीद के नव वर्ष की घोषणा करते हुए पिछले वर्ष के कुछ आंकड़े पेश करता हूँ। इस साल एक नवम्बर से यह तहरीक-ए-जदीद का 85वाँ साल आरम्भ हो चुका है। गत वर्ष की आने वाली रिपोर्टस के अनुसार 12.79 मिलयन से अधिक पाउंड अल्लाह तआला ने निष्ठावानों को क़ुर्बानी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई अर्थात एक करोड़ सत्ताईस लाख तेरानवे हज़ार पाउंड। यह गत वर्ष की तुलना में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दो लाख बारह हज़ार पाउंड अधिक है। बावजूद दुनिया के अनिश्चित हालात तथा अनेक देशों की क्रंसी का मूल्य गिरने के, अल्लाह तआला ने फिर भी सामर्थ्य प्रदान किया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- सामूहिक वसूली की दृष्टि से पाकिस्तान तो पहले स्थान पर होता ही है इसके बाद जर्मनी नम्बर एक पर है, बर्तानिया नम्बर दो, अमरीका नम्बर तीन, कैनेडा नम्बर चार, पाँच नम्बर पर भारत, छटे नम्बर पर आस्ट्रेलिया, सातवें पर मिडिल ईस्ट की एक जमाअत है फिर आठवें पर इन्डोनेशिया है फिर नवें नम्बर पर घाना है, दस्वें नम्बर पर फिर मिडिल ईस्ट का ही एक देश है।

दफ़्तर अव्वल के खाते भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सभी जारी हैं जो पाँच हज़ार नौ सौ सत्ताईस हैं।

इन्डिया की दस बड़ी जमाअतें हैं क़ुर्बानी की दृष्टि से, क़ादियान पंजाब, हैद्राबाद तिलंगाना, पित्था पीरियम केरला, चेन्नई तमिल नाडू, कालीकट केरला, बंगलूरू कर्नाटक, कल्कत्ता बंगाल, पयंगाड़ी केरला, कुन्नूर टाउन केरला, यादगीर कर्नाटक, प्रदेशों में क़ुर्बानी की दृष्टि से इन्डिया में पहला नम्बर है केरला का फिर कर्नाटक फिर तमिल नाडू, तिलंगाना, जम्मू कशमीर फिर उडीशा फिर पंजाब फिर बंगाल फिर देहली और महाराष्ट्र।

अल्लाह तआला इन सब क़ुर्बानी करने वालों के मालों तथा संतानों में अत्यधिक बरकतें अता फ़रमाए।

TOLL FREE NO: 180030102131